प्रागैतिहासिक औज़ार बनाने में आग का उपयोग

प्रागैतिहासिक मानव पत्थरों से औज़ार बनाया करते थे। आज भी उनके बनाए औज़ार हमें मिलते हैं। मगर इन्सानों ने औज़ार बनाना कब से शुरू किया था? एक विचार यह है कि शायद आधुनिक मानव (*होमो सेपिएन्स*) के विकास के बाद जल्दी ही औज़ार तो औज़ार, भाषा व कला का विकास भी शुरू हो गया था। *होमो सेपिएन्स* का प्रादुर्भाव आज से लगभग 2 लाख साल पहले हुआ माना जाता है।

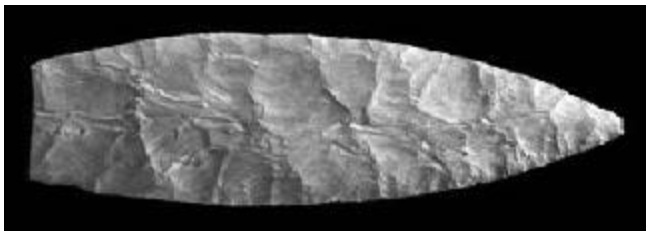

यह विचार साउथ अफ्रीका के केप टाउन विश्वविद्यालय के प्रायोगिक पुरातत्ववेत्ता काइल ब्राउन ने हाल ही में साइन्स पत्रिका में प्रकाशित किया है। उनके दल ने केप टाउन के समीप स्टिल बे में तेज़ धारदार पत्थर के औज़ार खोजे जो 47,000 से लेकर 1,64,000 वर्ष पुराने पाए गए। काइल के दल ने स्थानीय रूप से पाए जाने वाले भुरभुरे पत्थर से ऐसे औज़ारों की अनुकृतियां बनाने के प्रयास किए मगर असफलता ही हाथ लगी। दल ने गौर किया कि प्राचीन औज़ार अपेक्षाकृत बाद में बनाए गए उन औज़ारों से मेल खाते हैं जिन्हें पत्थर को ऊष्मा उपचारित करने के बाद बनाया गया था।

अब काइल के दल ने स्थानीय चट्टानों को पहले ऊष्मा उपचारित करने की ठानी। जब स्थानीय रूप से पाई जाने वाली चट्टानों को 10 घण्टे तक 300-350 डिग्री सेल्सियस पर पकाया गया तो वह न सिर्फ अधिक कठोर हो गई अपितु उसका भुरभुरापन भी कम हो गया। अब एक बार फिर प्राचीन औज़ारों का विश्लेषण किया गया। इससे स्पष्ट हुआ कि इन्हें भी पत्थर को पहले गर्म करने के बाद ही बनाया गया था।

इस विश्लेषण के आधार पर काइल का मत है कि औज़ार बनाने की क्षमता जितनी पुरानी मानी जाती है, उससे कहीं अधिक पुरानी हो सकती है और संभवतः इसी क्षमता के चलते इन्सानों ने अफ्रीका से बाहर निकलकर शेष दुनिया को फतह किया था। मगर अन्य लोग सहमत नहीं है। जैसे न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय के जॉन शिया का विचार है कि इन्सानों के दुनिया भर में फैलने के लिए ज़रूरी सारे नवाचारों और आविष्कारों की खोज साउथ अफ्रीका में करने का कोई अर्थ नहीं है। ***(स्रोत फीचर्स)***